कक्षा नौवीं

अनुच्छेद लेखन

नए स्कूल में मेरा पहला दिन

मैं नौवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैंने इसी साल नए स्कूल में प्रवेश लिया है। इस स्कूल में पढ़ते हुए मुझे चार महीने हो गये हैं। किंतु मुझे आज भी इस स्कूल में मेरा पहला दिन अच्छी तरह याद है। मेरे लिये यह दिन बड़ा ही यादगार व रोमांचकारी था। मेरे पिता जी ने मुझे नयी किताबें, कॉपियाँ और बैग खरीदकर दिया। मैं बस में बैठकर स्कूल पहुँच गया। मैं पहली बार बस से स्कूल में गया। मुझे बहुत अच्छा लगा। स्कूल पहुँचते ही हम कक्षा अध्यापक के साथ सुबह की प्रार्थना सभा में आ गए। वहाँ प्रिंसिपल ने नये विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणादायक बातें बताईं। इसके बाद स्कूल के पुराने विद्यार्थियों ने नौवीं कक्षा में नए प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों का एक-एक पेन देकर स्वागत किया। उन्होंने हमें प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, कम्प्यूटर का कमरा, स्टाफ रूम, कैंटीन, मेडीकल रूम आदि भी दिखाए। अर्धावकाश के समय मेरे कुछ नए मित्र बन गये। हम सभी ने मिलकर भोजन किया। खेल के पीरियड में मैंने फुटबॉल खेली। समय होने पर जब पूरी छुट्टी हुई तो हम पंक्तियों में बस में जा बैठे और हँसते-हँसते बातें करते घर आ गये। सचमुच, मैं आज भी वह दिन याद करके भाव विभोर हो जाता हूँ।

प्रगति कहीं न रुक जाए
भविष्य कहीं न छुप जाए

मोबाइल फोन और विद्यार्थी

आज मोबाइल फोन सभी की जिंदगी का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। मोबाइल ने हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अपने विभिन्न इस्तेमालों के कारण मोबाइल फोन काफी प्रचलित हो चुका है।समाज का हर वर्ग अपनी-अपनी आवश्यकतानुसार इससे लाभ उठा रहा है। विद्यार्थी वर्ग भी इससे अछूता नहीं है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय हर स्तर के विद्यार्थी की पहली पसंद मोबाइल बन चुका है। आज विद्यार्थी मोबाइल पर इंटरनेट की मदद से कहीं भी बैठे वांछित सामग्री को डाउनलोड करके और उसका प्रिंट लेकर अपनी पढ़ाई को गति प्रदान कर रहा है। इसके अतिरिक्त देश-विदेश के विभिन्न कॉलेजों में प्रवेश, प्रतियोगिताओं, परीक्षा परिणामों, नौकरी आदि से संबंधित भरपूर जानकारी वह इसी से एकत्रित करता है, किंतु विद्यार्थियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो इसका दुरुपयोग करता है। ऐसे विद्यार्थी आपस में घंटों बेकार में गप्पे हाँकने, ज़रूरत से ज्यादा मैसेज भेजने, वीडियो गेम्स खेलने, चित्र खींचने और नये-नये मोबाइल खरीदने और उनकी ही बातें करते रहने में अपना समय बर्बाद करते हैं। अत: ऐसे विद्यार्थियों को इसकी उपादेयता समझनी चाहिए और इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

पुस्तकालय के लाभ

पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। जहाँ हम विभिन्न महापुरुषों, विद्वानों, आलोचकों, साहित्यकारों, लेखकों, समाज सुधारकों आदि के अनुभवों और विचारों को पढ़कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। निस्संदेह जिस प्रकार जीवित रहने के लिये शुद्ध हवा, पानी, भोजन की आवश्यकता होती है, उसी तरह ज्ञान-पिपासा को शांत करने का उत्तम आहार पुस्तकें हैं। इनकी उपयोगिता को समझते हुए ही आज विद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थानों, गाँवों, कालोनियों आदि में पुस्तकालय खोले जाते हैं। पुस्तकालयों में पुस्तकों के अलावा विभिन्न विषयों की मैग़ज़ीनें, समाचार पत्र, इन्साइक्लोपीडिया आदि भी उपलब्ध रहते हैं। हमें पुस्तकों के साथ छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। जिस पुस्तक को जहाँ से लें, उसे पढ़कर वहीं रख देना चाहिए। आज अनेक पुस्तकालयों में इंटरनेट की भी सुविधा है जिससे विद्यार्थी अपनी आवश्यकतानुसार कोई भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। समाज में एक ऐसा भी वर्ग होता है जो महँगी पुस्तकें नहीं खरीद सकता, उनके लिए तो पुस्तकालय किसी वरदान से कम नहीं है। अत: यदि पुस्तकालय की इतनी उपयोगिता है तो हमें वहाँ बिना शोरगुल किए, चुपचाप शांतिपूर्वक बैठकर इससे अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

शिक्षा विभाग,पंजाब

मार्गदर्शक:-
डॉ. सुनील बहल, असिस्टेंट डायरेक्टर
एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब

तैयार कर्ता :
कंचन वासन
शाहकोट

सहयोगी:
राजन शर्मा
जालंधर

संशोधक :
सुमन सहगल
जालंधर